

भारतीय राष्ट्रीय संवत- शक संवत

डा. सुशील भाटी

शक संवत भारत का राष्ट्रीय संवत हैं। इस संवत को कृषाण/कसाना सम्राट कनिष्क महान ने अपने राज्य रोहण के उपलक्ष्य में 78 इस्वी में चलाया था। इस संवत कि पहली तिथि चैत्र के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा होती हैं जोकि भारत के विश्व विख्यात सम्राट कनिष्क महान के राज्य रोहण की वर्ष गाठ हैं। शक संवत में कुछ ऐसी विशेषताए हैं जो भारत में प्रचलित किसी भी अन्य संवत में नहीं हैं जिनके कारण भारत सरकार ने इसे "राष्ट्रीय संवत" का दर्जा प्रदान किया हैं।

भारत भाषाई और सांस्कृतिक बहुलता वाला विशाल देश हैं, जिस कारण आज़ादी के समय यहाँ अलग-अलग प्रान्तों में विभिन्न संवत चल रहे थे। भारत सरकार के सामने यह समस्या थी कि किस संवत को भारत का अधिकारिक संवत का दर्जा दिया जाए। वस्तुतः भारत सरकार ने सन 1954 में संवत सुधार समिति (Calendar Reform Committee) का गठन किया जिसने देश प्रचलित 55 संवतों की पहचान की। कई बैठकों में हुई बहुत विस्तृत चर्चा के बाद संवत सुधार समिति ने स्वदेशी संवतों में से शक संवत को अधिकारिक राष्ट्रीय संवत का दर्जा प्रदान करने कि अनुशंसा की, क्योंकि प्राचीन काल में यह संवत भारत में सबसे अधिक प्रयोग किया जाता था। शक संवत भारतीय संवतों में सबसे ज्यादा वैज्ञानिक, सही तथा त्रुटिहीन हैं, शक संवत प्रत्येक साल 22 मार्च को शुरू होता हैं, इस दिन सूर्य विश्वत रेखा पर होता हैं तथा दिन और रात बराबर होते हैं। शक संवत में साल 365 दिन होते हैं और इसका 'लीप इयर' 'ग्रेगोरियन कैलेंडर' के साथ-साथ ही पड़ता हैं। 'लीप इयर' में यह 23 मार्च को शुरू होता हैं और इसमें 'ग्रेगोरियन कैलेंडर' की तरह 366 दिन होते हैं।

पश्चिमी 'ग्रेगोरियन कैलेंडर' के साथ-साथ, शक संवत भारत सरकार द्वारा कार्यलयीय उपयोग लाया जाना वाला अधिकारिक संवत हैं। शक संवत का प्रयोग भारत के 'गज़ट' प्रकाशन और 'आल इंडिया रेडियो' के समाचार प्रसारण में किया जाता हैं। भारत सरकार द्वारा जारी कैलेंडर, सूचनाओं और संचार हेतु भी शक संवत का ही प्रयोग किया जाता हैं।

जहाँ तक शक संवत के ऐतिहासिक महत्त्व कि बात हैं, इसे भारत के विश्व विख्यात सम्राट कनिष्क महान ने अपने राज्य रोहण के उपलक्ष्य में चलाया था। अतः शक नव संवत्सर अर्थात ग्रेगोरियन कैलेंडर की 22 मार्च कनिष्क के राज्य रोहण की वर्ष गाँठ भी हैं।

कनिष्क महान एक बहुत विशाल साम्राज्य का स्वामी था। उसका साम्राज्य मध्य एशिया स्थित काला सागर से लेकर पूर्व में उड़ीसा तक तथा उत्तर में चीनी तुर्कस्तान से लेकर दक्षिण में नर्मदा नदी तक फैला हुआ था। उसके साम्राज्य में वर्तमान उत्तर भारत, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, उज्बेकिस्तान के हिस्सा, तजाकिस्तान का हिस्सा और चीन के यारकंद, काशगर और खोतान के इलाके थे। कनिष्क भारतीय इतिहास का एक मात्र सम्राट हैं।

जिसका राज्य दक्षिणी एशिया के बाहर मध्य एशिया और चीन के हिस्सों को समाये था। वह इस साम्राज्य पर चार राजधानियों से शासन करता था। पुरुषपुर (आधुनिक पेशावर) उसकी मुख्य राजधानी थी। मथुरा, तक्षशिला और बेग्राम उसकी अन्य राजधानियां थीं। कनिष्क इतना शक्तिशाली था कि उसने चीन के सामने चीनी राजकुमारी का विवाह अपने साथ करने का प्रस्ताव रखा, चीनी सम्राट द्वारा इस विवाह प्रस्ताव को ठुकराने पर कनिष्क ने चीन पर चढ़ाई कर दी और यारकंद, काशगार और खोतान को जीत लिया।

कनिष्क के राज्य काल में भारत में व्यापार और उद्योगों में अभूतपूर्व तरक्की हुई क्योंकि मध्य एशिया स्थित रेशम मार्ग जिससे यूरोप और चीन के बीच रेशम का व्यापार होता था उस पर कनिष्क का कब्जा था। भारत के बढ़ते व्यापार और आर्थिक उन्नति के इस काल में तेजी के साथ नगरीकरण हुआ। इस समय पश्चिमोत्तर भारत में करीब 60 नए नगर बसे और पहली बार भारत में कनिष्क ने ही बड़े पैमाने सोने के सिक्के चलवाए।

कुषाण समुदाय एवं उनका नेता कनिष्क मिहिर (सूर्य) और अतर (अग्नि) के उपासक थे। उसके विशाल साम्राज्य में विभिन्न धर्मों और रास्ट्रीयताओं के लोग रहते थे। किन्तु कनिष्क धार्मिक दृष्टिकोण से बेहद उदार था, उसके सिक्को पर हमें भारतीय, ईरानी-जुर्थुस्त और ग्रीको-रोमन देवी देवताओं के चित्र मिलते हैं। बाद के दिनों में कनिष्क बौद्ध मत के प्रभाव में आ गया। उसने कश्मीर में चौथी बौद्ध संगति का आयोजन किया, जिसके फलस्वरूप बौद्ध मत कि महायान शाखा का उदय हुआ। कनिष्क के प्रयासों और प्रोत्साहन से बौद्ध मत मध्य एशिया और चीन में फैल गया, जहाँ से इसका विस्तार जापान और कोरिया आदि देशों में हुआ। इस प्रकार गौतम बुद्ध, जिन्हें भगवान विष्णु का नवा अवतार माना जाता है, उनके मत का प्रभाव पूरे एशिया में व्याप्त हो गया और भारत के जगद गुरु होने का उद्घोष विश्व की हवाओं में गूजने लगा।

कनिष्क के दरबार में अश्वघोष, वसुबंधु और नागार्जुन जैसे विद्वान थे। आयुर्विज्ञानी चरक और श्रुश्रत कनिष्क के दरबार में आश्रय पाते थे। कनिष्क के राज्यकाल में संस्कृत सहित्य का विशेष रूप से विकास हुआ। भारत में पहली बार बौद्ध साहित्य की रचना भी संस्कृत में हुई। गांधार एवं मथुरा मूर्तिकला का विकास कनिष्क महान के शासनकाल की ही देन है।

मौर्य एवं मुगल साम्राज्य की तरह कुषाण वंश ने लगभग दो शताब्दियों (50-250) तक उनके जितने ही बड़े साम्राज्य पर शान से शासन किया। कनिष्क का शासनकाल इसका चर्मोत्कर्ष था। कनिष्क भारतीय जनमानस के दिलो दिमाग में इस कदर बस गया कि वह एक मिथक बन गया। तद्दिके - हिंद का लेखक अलबरूनी 1000 ईस्वी के लगभग भारत आया तो उसने देखा कि भारत में यह मिथक प्रचलित था कि कनिष्क की 60 पीढियों ने काबुल पर राज किया है। कल्हण ने बारहवीं शताब्दी में कश्मीर का इतिहास लिखा तो वह भी कनिष्क और उसके बेटे हुविष्क कि उपलब्धियों को बयां करता दिखलाई पड़ता है। कनिष्क के नाम की प्रतिष्ठा हजारों

वर्ष तक कायम रही, यहाँ तक कि भारत के अनेक राजवंशों की वंशावली कुषाण काल तक ही जाती है।

शक संवत का भारत में सबसे व्यापक प्रयोग अपने प्रिय सम्राट के प्रति प्रेम और आदर का सूचक है, और उसकी कीर्ति को अमर करने वाला है। प्राचीन भारत के महानतम ज्योतिषाचार्य वाराहमिहिर (500 ईस्वी) और इतिहासकार कल्हण (1200 ईस्वी) अपने कार्यों में शक संवत का प्रयोग करते थे। उत्तर भारत में कुषाणों और शकों के अलावा गुप्त सम्राट भी मथुरा के इलाके में शक संवत का प्रयोग करते थे। दक्षिण के चालुक्य और राष्ट्रकूट और राजा भी अपने अभिलेखों और राजकार्यों में शक संवत का प्रयोग करते थे।

मध्य एशिया की तरफ से आने वाले कबीलो को भारतीय सामान्य तौर पर शक कहते थे, क्योंकि कुषाण भी मध्य एशिया से आये थे इसलिए उन्हें भी शक समझा गया और कनिष्क कुषाण/कसाना द्वारा चलाया गया संवत शक संवत कहलाया। इतिहासकार फुर्गुसन के अनुसार अपने कुषाण अधिपतियों के पतन के बाद भी उज्जैन के शकों द्वारा कनिष्क के संवत के लंबे प्रयोग के कारण इसका नाम शक संवत पड़ा।

शक संवत की लोकप्रियता का एक कारण इसका उज्जैन के साथ जुड़ाव भी था, क्योंकि यह नक्षत्र विज्ञान और ज्योतिष का भारत में सबसे महत्वपूर्ण केन्द्र था। मालवा और गुजरात के जैन जब दक्षिण के तरफ फैले तो वो शक संवत को अपने साथ ले गए, जहाँ यह आज भी अत्यंत लोकप्रिय है। दक्षिण भारत से यह दक्षिण पूर्वी एशिया के कम्बोडिया और जावा तक प्रचलित हो गया। जावा के राजदरबार में तो इसका प्रयोग १६३३ ईस्वी तक होता था, जब वहा पहली बार इस्लामिक कैलेंडर को अपनाया गया। यहाँ तक कि फिलीपींस से प्राप्त प्राचीन ताम्रपत्रों में भी शक संवत का प्रयोग किया गया है।

शक संवत एवं विक्रमी संवत

शक संवत और विक्रमी संवत में महीनों के नाम और क्रम एक ही हैं- चैत्र, बैसाख, ज्येष्ठ, आसाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, पौष, अघन्य, माघ, फाल्गुन। दोनों ही संवतों में दो पक्ष होते हैं- शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष। दोनों संवतों में एक अंतर यह है कि जहाँ विक्रमी संवत में महीना पूर्णिमा के बाद कृष्ण पक्ष से शुरू होता है, वही शक संवत में महीना अमावस्या के बाद शुक्ल पक्ष से शुरू होते हैं। उत्तर भारत में दोनों ही संवत चैत्र के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को आरम्भ होते हैं, जोकि शक संवत के चैत्र माह की पहली तारीख होती है, किन्तु यह विक्रमी संवत के चैत्र की १६ वी तारीख होती है, क्योंकि विक्रमी संवत के चैत्र माह के कृष्ण पक्ष के पन्द्रह दिन बीत चुके होते हैं। गुजरात में तो विक्रमी संवत कार्तिक की अमावस्या के अगले दिन से शुरू होता है।

सन्दर्भ

1. U P Arora , Ancient India: Nurturants of Composite culture, Papers from The Aligarh Historians Society , Editor Irfan Habib, Indian History Congress, 66th sessions , 2006.
2. A L Basham, The wonder that was India, Calcutta, 1991.
3. Shri Martand Panchangam, Ruchika Publication, Khari Bawli, Delhi, 2012.
4. Rama Shankar Tripathi, History of Ancient India, Delhi, 1987.
5. D N Jha & K M Shrimali, Prachin Bharat ka Itihas, Delhi University, 1991.
6. Prameshwari lal Gupta, Prachin Bhartiya Mudrae, Varanasi, 1995.
7. Lalit Bhusan, Bharat Ka Rastriya Sanvat- Saka Sanvat, Navbharat Times, 11 April 2005.
8. Indian National Calendar-
Wikipedia http://en.wikipedia.org/wiki/Indian_national_calendar
9. The Hindu Calendar System -
<http://hinduism.about.com/od/history/a/calendar.htm>,
10. Kanishka; the Saka Era, art and literature-
<http://articles.hosuronline.com/articleD.asp?pID=958&PCat=8>
11. Hindu Calendar- Wikipedia – http://en.wikipedia.org/wiki/Hindu_calendar